

दुर्गति (Phobia)

दुर्गति एक सामान्य चिंता विकार है। चिंता विकार के दो प्रकार होते हैं। विशेष वस्तु या परिस्थिति से उत्पन्न होने वाले अत्यधिक डर या चिंता को दुर्गति कहते हैं। जो व्यक्ति को जीवन में बाधा डालता है। जो व्यक्ति को दुर्गति से निजा दिलाने में मदद करता है। जो व्यक्ति को दुर्गति से निजा दिलाने में मदद करता है।

Coleman के अनुसार - चिंता विकार या डर के प्रति सामान्य डर को दुर्गति कहते हैं। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है।

Seligman & Rosenhan के अनुसार - "दुर्गति एक ऐसा डर है जो सामान्य डर से अलग है। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है।"

दुर्गति एक सामान्य चिंता विकार है। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है।

दुर्गति के लक्षण (Symptoms of Phobia) -

→ चिंता विकार वस्तु या परिस्थिति से उत्पन्न अत्यधिक डर या चिंता को दुर्गति कहते हैं। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है।

→ व्यक्ति को उस विशेष वस्तु से सामना होने पर अत्यधिक चिंता या निमित्तकार होना भी लक्षण है। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है।

→ लोग यह समझते हैं कि वे अत्यधिक डर वस्तु अत्यधिक चिंता से अत्यधिक डरते हैं। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है।

→ व्यक्ति दुर्गति उपलब्ध करने वाले परिस्थिति से दूर रहना चाहते हैं। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है। जो व्यक्ति को सामान्य डर से अलग करता है।

23

OCTOBER
WEDNESDAY

→ दुर्गति रोगों में कई आसक्ति लक्षण हैं -
समाव, विरह, पीठ-दर्द, पेट की जड़क
आदि भी देखने में मिलते हैं

PHENOMENA

→ तब - तब या आसक्ति (panic) की स्थिति में व्यक्ति में व्यक्तित्व लक्षण का अनुभव नहीं होता पाया जाता है

→ दुर्गति में प्रायः विचार-केंद्रित लक्षण भी देखे जाते हैं। कुछ रोगी निर्धारित क्षेत्रों में व्यक्ति का अनुभव नहीं करते हैं, जैसे संयंत्र में व्यस्त करते हुए निर्धारित दुर्गति (deciophobia) कर रहे हैं

दुर्गति के प्रकार :-

- + विशिष्ट दुर्गति (specific phobias)
- + लक्ष्य दुर्गति (Agoraphobia)
- + सामाजिक दुर्गति (social phobias)

→ विशिष्ट दुर्गति :- यह एक खास अवस्था है, जो किसी विशेष वस्तु या परिस्थिति की उपस्थिति या उसके अनुमान मात्र से ही उत्पन्न हो जाता है।
जैसे - विषम से डर (Arthropophobia or Gadophobia)
रक्त से डर (Hematophobia)
खाली कमरा से डर (Kerophobia)
पानी से डर (Hydrophobia) आदि।

→ Agoraphobia :- इसमें कई तरह के डर सम्मिलित होते हैं। जिसका केंद्र बिंदु सामाजिक स्थान होता है। व्यक्ति में ऐसा विकार होता है कि किसी तरह की उपस्थिति होने पर इस स्थान पर उसे कई भी बचाने नहीं। आसक्ति परियामत्वपूर्ण स्वभाव से वह मंडि-मंडि वाले स्थानों में जाने से डरता है, यात्रा से डर, बाजार-स्थान से डर आदि लक्षणों के कुछ प्रकार हैं। लक्षणों का आसक्ति अन्य मंडि-मंडि या बाजार स्थान से डर होता है।

→ सामाजिक-दुर्गति :- सामाजिक-दुर्गति में व्यक्ति को अलग व्यक्ति की उपस्थिति का सामना करने के लिए लगता है। इसे लगता है कि वे अलग व्यवहार करने में मदद न दें। यह एक परिवर्तन है जो अलग हीनता महसूस है। यह चिंता या असुरक्षा को उत्पन्न करता है जो सामाजिक-दुर्गति को अलग-अलग रूप में लक्षणों के साथ सामना करने में मदद करता है।

दुर्गति के कारण (Etiology of Phobia) -

दुर्गति के कारण - यह एक वर्गीकृत रूप है -

- जैविक कारण -
- मनोवैज्ञानिक कारण -
- आनुवंशिक कारण -
- सामाजिक कारण -

→ जैविक कारण - यह है कि यह जीवशास्त्रीय परिवर्तन के होते हैं जो कुछ लक्षणों में दुर्गति विकसित होती है। यह कुछ में मदद करता है। वर्तमान में यह है कि ~~कुछ~~ ^{कुछ} ~~लक्षण~~ ^{लक्षण} ~~दुर्गति~~ ^{दुर्गति} उत्पन्न होती है, अन्य कुछ जैविक लक्षणों को उत्पन्न करते हैं।

→ अध्ययनों के अनुसार पता है कि कुछ लक्षणों में पिछले अध्ययनों से यह है कि यह है कि ~~परिवर्तन~~ ^{अवस्था} ~~को~~ ^{को} ~~प्रतिक्रिया~~ ^{प्रतिक्रिया} ~~को~~ ^{को} ~~उत्पन्न~~ ^{उत्पन्न} ~~होता~~ ^{होता} ~~है~~ ^{है}। अन्य दुर्गति उत्पन्न होने के संभावना अधिक होती है Levey ने इस अध्ययन अवस्था (autonomic lability) से है।

→ कुछ अध्ययनों के बाद पता है कि दुर्गति अलग-अलग में अधिक होती है। पिछले मान-प्राप्त या संवेदनशील में यह है कि यह पहले उत्पन्न हो चुका है। अतः प्रकृत अवस्था आनुवंशिक रूप से संभव है।

→ मनोवैज्ञानिक सिद्धांत - दुर्गति के कारणों में आनुवंशिक कारणों के रूप में यह है कि ~~यह~~ ^{यह} ~~है~~ ^{है} ~~कुछ~~ ^{कुछ} NOTES

5

OCTOBER
FRIDAY

परिस्थितियाँ मनुष्य के सामने रखी होती हैं कि
 वे उसे समझ कर ही वह व्यक्ति अपने-एक ही
 स्था के लिए बल प्रका की परिस्थितियों से पलायन
 करता है। वह यह भी समझता है कि उसका बल प्रका
 का क्या अर्थगत है, कि वह भी अनर्हण से बचने के
 लिए वह उन स्थितियों या वस्तुओं से समझता
 होता है कि उसका यह क्या उन वस्तुओं से
 संबंधित हो जाता है, जो अत्यंत ही खतरनाक से
 विचार-न-विचार होना से जुड़ा होता है।

क्या न यह समझता है कि पशु दुर्गति
 वस्तु से बचपाकर के अत्यंत ही से उद्यम होता
 है। इसी-इसी दुर्गति का कारण व्यक्ति की दमित-
 भावना या अति आवेग का होना है। यह ही
 एक ही, जिसके अत्यंत से अपनी पंक्ति को पानी
 से बिराकर मारने की इच्छा है, जो अपने ही दुर्गति
 उद्यम से सक्ती है इच्छा, यदि किसी रूप में अपने
 पुत्र का बला करने की इच्छा विद्यमान हो तो उसे
 याद आदि बल प्रका प्राप्त- दमित के ही अत्यंत
 अथ उद्यम हो सक्ती है। इस प्रकार वह बल प्रका है
 कि दुर्गति का कारण व्यक्ति की भावनात्मक अनर्हण
 या दमित इच्छा का होना है।

→ 029812428 3128 — इसके अत्याद पर दुर्गति उद्यम होने
 का मुख्य कारण दोषपूर्ण भावना होता है। इसी
 प्रकार ही तरह के मारने से ही होता है।

(ii) परिहार- अनुबंधन (Avoidance conditioning) — इसके
 अनुसार दुर्गति वस्तुओं से बचना प्रका अनुबंधन द्वारा
 संभव हो सकता है। जैसे - जब किसी तरह का उद्यम
 से ही उद्यम करने का उद्यम के साथ जुड़ना शुरू
 किया जाता है, जो व्यक्ति इस तरह का उद्यम से ही
 उद्यम संभव होता है। दुर्गति उद्यम होने के लिए यह
 ही आवश्यक है कि उद्यम से सामान्यतः ही।
 अर्थात् व्यक्ति अपने समान उद्यम से ही है।

(ii) मॉडलिंग (Modeling) — मॉडलिंग के अनुसार दुर्गति व्यक्ति को दुर्गति के व्यवहार को दोहराने या सुधार को विकसित होता है। एक माता-पिता द्वारा प्रदर्शित व्यवहार को कुछ ऐसे माता-पिता का दर्शन प्राप्त करने के साथ-साथ व्यवहार को साँप से काफी सख्त होने लगता है। सभी के लिए यह पाया गया कि किशोर बच्चों को माता-पिता के साथ ही रहने से इसी तरह का व्यवहार से विकसित हो गया जो कि स्वयंसेवक रूप से बना रहा।

(iii) सकारात्मक पुनर्बलन (Positive reinforcement) — दुर्गति का विकास व्यक्ति को सकारात्मक पुनर्बलन के आधार पर ही होता है। अर्थात् यदि कोई बच्चा स्कूल में जाने से डर कर अपने माता-पिता के सामने कुछ ऐसा कहना बनाता है कि उसे स्कूल नहीं जाना। उसे माता-पिता उसे माफ़ लेते हैं, तो वह बच्चा भविष्य में डर कर स्कूल में जाने की अनुमति करता और कहता है।

→ संशान्तिपूर्ण कार्य — दुर्गति विकार से ग्रस्त व्यक्ति जान-बूझकर परिवार को या उसके मिलने वाली सुखनाशकियों को डर डेरा से संशान्तिपूर्ण करता है। कि उसके द्वारा दुर्गति को माता-पिता से भयानक हो जाता है। इस तरह से दुर्गति के उत्पन्न होने का तथा उसे संशान्तिपूर्ण होने में इस तरह का सकारात्मक प्रोत्साहन होता है।

इस प्रकार यह वास्तविक है कि व्यक्ति को दुर्गति उत्पन्न होने के लिए, मनोवैज्ञानिकशास्त्र, व्यवहारशास्त्र एवं सकारात्मक कार्य से संभव है।